भाषा परिवर्तन के कारण

परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है। मनुष्य की मनःस्थिति में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। परिणाम स्वरुप मनुष्य के विचारों में भी परिवर्तन आ जाता है। भाषा मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। अतः भाषा में और शब्दों में भी परिवर्तन आ जाता है। शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन, संवर्धन, ह्रास, उत्कर्ष, और अपकर्ष होता है और अर्थ परिवर्तित होता है। इसलिए कहा भी गया है...

" Chenge is the law of nature"

मनुष्य द्वारा परस्पर विनिमय के लिए प्रयुक्त भाषा भी इस परिवर्तन से नहीं बची। भाषा के विकास अथवा परिवर्तन के दो प्रमुख कारण है...

1) अभ्यंतर कारण
2) बाह्य कारण

1) अभ्यंतर कारण

अभ्यंतर कारण का संबंध मनुष्य की शारीरिक और मानसिक योग्यता आदि से होता है। इस वर्ग के अंतर्गत निम्नलिखित कारण आते है।

1) प्रयत्न लाघव -- मानव की स्वाभाविक वृत्ति है कि कठिनता से सरलता की ओर जाना। यह सरलता की प्रवृत्ति हर क्षेत्र में देखी जाती है। आदमी को किसी स्थान पर जाना है तो वह छोटा रास्ता अर्थात शॉर्टकट ढूँढता है। यही प्रवृत्ति भाषा में भी दिखाई देती है। प्रयत्न लाघव या मुख सुख अर्थात मनुष्य शब्दों का उच्चारण करते समय सरलता चाहता है और सरलता के साथ साथ शीघ्रता भी चाहता है। प्रयत्न लाघव की इसी प्रवृत्ति के कारण शब्द का उच्चारण करते समय उसका रूप बदल जाता है ।

   उदाहरणार्थ -- कब ही से कभी
   अब ही से अभी

   अंग्रेजी में भी मुख सुख लिया जाता है--

   जैसे -- Know -- क्नो का उच्चारण 'नो'
   Talk -- टाल्क का उच्चारण टॉक
   Walk -- वाल्क का उच्चारण वॉक

2) बलाघात -- भाषा के परिवर्तन का बलाघात भी एक मुख्य कारण है । बलाघात यानी किसी शब्द के उच्चारण में किसी ध्वनि पर बल दिया जाता है तो धीरे धीरे शेष ध्वनियां कमजोर पड़कर गायब हो जाती है। वैसे देखा जाए तो मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है कि कम से कम प्रयास में अधिक लाभ उठाना इसी प्रवृत्ति का उपयोग मनुष्य भाषा में भी करता है। इसीलिए भाषा में काफी हेर-फेर हो जाता है।

   उदाहरणार्थ --
   निम्ब > नीम
   अभ्यंतर > भीतर
   टेलीफोन > फोन
   पोस्टकार्ड > कार्ड आदि

3) अपूर्ण अनुकरण -- मनुष्य अनुकरण प्रिय प्राणी है। भाषा को भी वह अनुकरण से सीखता है परंतु मनुष्य स्वयं अनुकरण करने में अपूर्ण होने के कारण वह शुद्ध और पूर्ण अनुकरण नहीं कर पाता इस अपूर्णता के कई कारण है जिम में अज्ञान को शिक्षा श्रवण अथवा वाद्य यंत्र की भिन्नता दी है। 'अशिक्षा' के उदाहरण निम्नानुसार है..

By Dr. Sangita Chitrakoti

उदाहरणार्थ --- रिपोर्ट > रपट
टाइम > टेम
लार्ड > लाट
देश > देस

4) बलात परिवर्तन -- (जानबूझकर परिवर्तन)
कभी-कभी भाषा प्रयोगकर्ता भाषा में जानबूझकर परिवर्तन कर देते हैं। यह प्रवृत्ति विशेष रुप से लेखक वर्ग में दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि कभी वे नए शब्दों का प्रयोग करके विलक्षण रूप देना चाहते हैं तो कभी अपने ज्ञान प्रदर्शन की लालसा भी शब्दों में परिवर्तन लाती हैं।
उदाहरणार्थ -- प्रसाद के द्वारा अलेक्जेंडर का अलक्षेंद्र कर देना इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।
कभी-कभी एक भाषा के किसी शब्द विशेष के लिए दूसरी भाषा में उपयुक्त शब्द ना मिलने पर जानबूझकर उसके मिलते जुलते शब्द का उपयोग किया जाता है।
उदाहरणार्थ -- ट्रेजेडी > त्रासदी
हॉस्पिटल > अस्पताल
कॉमेडी > कामदी
बॉक्स > बक्सा

5) भावावेश -- विचारशील होने के साथ-साथ मनुष्य भावुक भी होता है। यह स्थिति भाषा पर भी प्रभाव डालती है। भावावेश के कई कारण है-- इनमें प्रेम, घृणा, दुख, आदि भाव आते हैं।
उदाहरणार्थ -- प्रेम या दुलार के लिए भावाधिक्य में मनुष्य
बेटी > बिटिया
कृष्णा > किसनवा
बेटा > बेटवा आदि शब्दों का प्रयोग करता है।
इस प्रकार भावावेश भाषा परिवर्तन का कारण है।

6) असावधानी -- मनुष्य के स्वभाव में और असावधानी भी पाई जाती है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में असावधानी देखी जा सकती है। यहीं असावधानी भाषा में भी दिखाई देती है। असावधानी का यह प्रभाव भाषा में परिवर्तन कर देता है।
उदाहरणार्थ -- मतलब > मतबल
नरक > नर्क
लखनऊ > नखनऊ
ये विकृत शब्द धीरे-धीरे भाषा में आने लगते हैं।

7) मानसिक योग्यता -- जिस प्रकार मनुष्य के विभिन्न सामाजिक स्तर होते हैं उसी प्रकार मानसिक स्तर भी होते हैं। मनुष्य की इसी मानसिक स्तर की भिन्नता के कारण उसके द्वारा प्रयुक्त शब्दों पर प्रभाव पड़ता है फलस्वरूप भाषा में परिवर्तन आता है।